पंडित नेहरू की प्रासंगिकता (वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. जोगेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक
(इतिहास विभाग)
अब्दुल रज्जाक (पी.जी.) कॉलेज,
जोया, अमरोहा।
Gmail Id- 58jsingh@gmail.com

सारांश

पंडित जवाहरलाल नेहरू, भारतीय इतिहास के महान नेताओं में से एक थे, जिनका प्रभाव आज भी हमारे समाज और राजनीतिक चरित्र पर अद्वितीय है। नेहरूजी के विचार, उनकी दृष्टि, और उनके नेतृत्व का महत्व वर्तमान समय में भी निरंतर महसूस किया जाता है। नेहरूजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय एकता और अद्वितीयता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके सोचने का तरीका और उनकी राष्ट्रवादी दृष्टि वर्तमान भारतीय समाज में भी महत्वपूर्ण है। नेहरूजी विश्व शांति और सहयोग के पक्षधर थे। उनकी विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उनका योगदान आज भी महत्वपूर्ण है। नेहरूजी ने विज्ञान और तकनीक को महत्व दिया और भारतीय समाज में आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। वे नवाचारों को प्रोत्साहित करने और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने में विशेष रूप से रुचि रखते थे। नेहरूजी को शिक्षा के महत्व का गहरा ज्ञान था और उन्होंने शिक्षा को लोगों के समृद्धि और राष्ट्रीय विकास के लिए महत्वपूर्ण माना। वे नई शिक्षा नीतियों को बढ़ावा देने में विशेष रूप से सक्रिय रहे। इन सभी कारकों के संदर्भ में, पंडित नेहरू की सोच और उनकी दृष्टि वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनकी विचारधारा और दृष्टिकोण आज के भारतीय समाज में भी गहरी प्रभावित हैं।

कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जिन्हे व्यक्ति न कहकर व्यक्तित्व कहना अधिक उपयुक्त होता है और पंडित जवाहर लाल नेहरू उन्ही मे से एक है। नेहरू का व्यक्तित्व ट्रिनिटी एवं कैम्ब्रिज जैसी संस्थाओं से बना था। नेहरू एक ऐसे व्यक्ति थें जिन्हे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था जिससे यह पता चलता है कि नेहरू जी में कुछ तो बात थी। 15 अगस्त, 1947 को जब भारतवासियों ने गुलामी का जुआ उतार फेका तो भारत की एक महान उपलब्धि यही थी कि प्रधानमंत्री के रूप मे नेहरू जैसे व्यक्ति को भारत का प्रतिनिधित्व करने को मिला। अहमदनगर जेल मे बैठकर '' भारत एक खोज'' नामक पुस्तक जिस व्यक्ति ने लिखी वही व्यक्ति भारत की खोज था।

नेहरू दूरदर्शी थे। जब नेहरू विदेश मे उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तब उन्हे प्रथम बार समाजवाद के बारे मे जानकारी हुई। उन्होने देश विदेश की यात्रा कर समाजवाद के प्रति अपनी सोच विकसित की। रूस उस समय सबसे शक्तिशाली देश था रूस की समाजवादी नीतियों का प्रभाव नेहरू पर हुआ। उन्होने रूस को अपना रोल मॉडल माना इसी आधार पर उन्होने अपने देश का विकास किया।

समाज से हर प्रकार का शोषण समाप्त कर शोषणविहीन समाज की स्थापना करना उनका ध्येय था। नेहरू जानते थे कि आर्थिक विषमता राष्ट्र की उन्नति के लिए घातक है। समाजवाद की स्थापना प्रजातंत्र पद्धति से ही सम्भव है। नेहरू समाजवाद एवं प्रजातंत्र को एक ही सिक्के के दो पहलू मानते थे। नेहरू की आर्थिक विचारधारा और नीतियां भारत की परिस्थिति के अनुसार निर्मित हुई थी। उनका विचार था गरीबी, निरक्षरता, बेरोजगारी जैसी मुख्य समस्याओं का निराकरण वैज्ञानिक एवं समाजवादी ढंग से ही हो सकता है। स्वतंत्रता के बाद नेहरू ने समाजवाद को इसलिए स्वीकार किया क्योंकि देश की आर्थिक समस्याओं के हल का अन्य कोई मार्ग नही था।

जिस समय देश आजाद हुआ उस समय भारत कृषि, खाद्यान्न, शिक्षा, उद्योग आदि मे पिछडा हुआ था। नेहरू जानते थे कि भूखे आदमी के लिए आजादी का कोई मतलब नही होता। इसलिए उन्होने पंचवर्षीय योजनाओं के

माध्यम से भारत के विकास का एक ढांचा तैयार किया। उन्होने कहा था ''कि सबकुछ रूक सकता है लेकिन खेती इन्तजार नही कर सकती''

1960 ई0 मे कृषि के विकास के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय की स्थापना की जिससे कृषि मे यंत्रीकरण, उत्तम बीज, खाद् की जांच हो। नेहरू ने समय की नजाकत को समझते हुए बडे बडे बांधो का निर्माण किया जिन्हे उन्होने भारत के मंदिरो की संज्ञा दी। भाखडा नांगल, दामोदर नदी घाटी परियोजनाए हीराकुड जैसे बांधो ने भारत की दिशा ही बदल दी। बांधों से बिजली व सिंचाई की व्यवस्था की गई। कृषि के विकास के लिए किसानों को कृषि पंडित जैसी उपाधियां दी गयी।

नेहरू जानते थे कि गरीबी एवं बेरोजगारी दूर करने का प्रमुख उपाय उद्योगो का विकास करना है क्योंकि प्राचीन समय से ही भारत मे लघु एवं कुटीर उद्योगो के विकास से ही उन्नति हुई है। नव स्वतंत्र राष्ट्रो मे सिंर्फ हिन्दुस्तान ही ऐसा राष्ट्र था जो औद्योगीकीरण के रास्ते पर चलने की सोच भी सका था।इसका एकमात्र श्रेय नेहरू जी को है अन्यथा एशिया अफ्रीका के दर्जनों देशों को आजादी मिली पर वे आजतक अपने यहां सूई भी नही बना सकें। जबकि हम प्रत्येक क्षेत्र मे आत्मनिर्भर हो चुके है। हमारी समस्या अन्य देशों के मुकाबले ज्यादा थी। यह नेहरू के सपनो का परिणाम था कि हिन्दुस्तान ने आत्मसम्मान से खडे होने की कोशिश आजादी के समय से ही कर दी थी। नेहरू के समय भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला,चितरंजन, सिन्दरी उर्वरक कारखानों का विकास किया गया। पंडित नेहरू ने बडें व छोटें उद्योग सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत उद्यम, कृषक और मजदूर सभी का एकसाथ ध्यान रखा। उन्होने देश विदेश की अर्थव्यवस्थाओं का सूक्ष्म अध्ययन भारतीय जनता के मनोविज्ञान, उसके वर्तमान संस्कारो, विश्वासों और दुनिया के विकसित एवं विकासोनमुख देशो की समृद्धि के परिपेक्ष्य मे तर्क सम्मत विकासक्रम तय करके योजना का खाका बनाया। वे उद्योगो के राष्ट्रीयकरण के पक्ष मे थे। साथ ही चाहते थे कि निजी क्षेत्र को विकास के पूरे अवसर दिये जाए। उन्होने कहां हमे प्रत्येक उद्योग का राष्ट्रीयकरण का प्रयास नही करना चाहिए।सरकार को नये आधुनिक उधोगो की स्थापना करनी चाहिए तथा वर्तमान उधोगो के राष्ट्रीयकरण पर अपने साधन बर्बाद नही करने चाहिए।

हिन्दुस्तान की जिन खूबियों एवं कमियों की चर्चा होती है उसकी जडें नेहरू तक जाती है। एक स्वतंत्र राष्ट्र की गाडी को विकास की पटरी पर तेज चलाना आसान काम नही था यह आधुनिकता के सपने देखने वाला कोई कप्तान ही हो सकता है और नेहरू वो कप्तान सिद्ध हुए। नेहरू बिल्कुल विपरीत ध्रुव का प्रतिनिधित्व करते थे। उनकी सोच आधुनिक वैज्ञानिक अर्थात प्रगतिशील थी। धार्मिक कर्मकाण्ड उनकी कोई दिलचस्पी नही थी और उनकी सहानुभूति समाजवादी विचारधारा के प्रति मुखर होती रहती थी। भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बनने के बाद भी शीत युद्ध के समय में नेहरू जी का झुकाव सोवियत संघ की तरफ साफ झलकता है।

1920 मे भारतीय राजनीति मे प्रवेश कर गांव गांव घुमकर वहां की समस्याऐं देखी तब नेहरू जी ने भारत मे सामाजिक परिवर्तन शुरू किये तो गांवो की अनेको मूल समस्याऐं थी, जैसे जमींदारी प्रथा, कृषि का पिछडापन, सिंचित भूमि का अभाव, कम उत्पादन, अशिक्षा, बेकारी, सामाजिक विषमता आादि। नेहरू के नेतृत्व मे इन सभी समस्याओं का सकुशल स्थायी समाधान किया गया। आज देश कैसे आई. आई.एस.सी, आई.आई.टी. आई.आई.एम, ऐम्स जैसी संस्थाओं को भुला सकता है, जिसमे शिक्षा ग्रहण कर भारतीय छात्र विदेशियों पर राज कर रहे हैं। नेहरू जानते थे कि आज विद्यार्थी कल का नागरिक होगा और देश का भार उसके कन्धो पर होगा इसलिए वह चाहते थे कि छात्रों के लिए उच्च शिक्षा का प्रबन्ध हो क्योंकि विद्यार्थी जितना प्रबुद्ध, कुशल, सक्षम और प्रतिभासम्पन्न होगा देश का भविष्य उतना ही उज्जवल होगा।

स्वाधीनता के तुरंत बाद नेहरू जी ने अनुभव किया था कि वर्तमान मे कोई देश चाहे कितना भी महान व शक्तिशाली क्यों न हो अणुशक्ति के बिना प्रगति नही कर सकता। शांतिमूलक प्रयोजनो के लिए परमाणु अनुसंधानों मे नेहरू जी की दिलचस्पी थी इसी कारण सन 1948 ई0 मे होमी जहांगीर भाभा की अध्यक्षता मे परमाणु उर्जा का गठन किया गया। नेहरू जी के परमाणु उर्जा कार्यक्रमों का लक्ष्य शांतिमूलक था। वह परमाणु विद्युत तो चाहते थे परन्तु परमाणु आयुद्ध नही। नेहरू के अवसान काल तक भारत मे कोई भी परमाणु परीक्षण नही किया गया जबकि

भारत सक्षम था। आज उन्ही का सपना साकार हो रहा है उनके द्वारी डाली गयी नींव से भारत आज परमाणु सम्पन्न देश है लेकिन भारत की संस्कृति इसप्रकार की है कि वह परमाणु शक्ति का गलत प्रयोग कभी नही कर सकता।

अतः नेहरू जी ने भारतीय अणुशक्ति आयोग का गठन किया जिसके अध्यक्ष होमी जहांगीर भाभा थें उन्हे अणुशक्ति का मानवहित मे प्रयोग करने की पूरी छूट दी। शक्ति के प्राकृतिक साधन कोयला, तेल, गैस दिन प्रतिदिन क्षीण होते जा रहें है। नेहरू जी ने आणविक शक्ति का प्रयोग उद्योग धन्धों का बढावा देने, कृषि, बिजली के उत्पादन, सिंचाई की व्यवस्था व आत्मरक्षा के लिए किया था। यह बात नेहरू जी भली भांति जानते थे। उनके समय में जयप्रकाश नारायण, आचार्य जे.बी. कृपलानी, भारतरत्न बी.आर. अम्बेडकर जैसे विपक्षी लोग भी उनके मंत्रीमंडल मे थे। नेहरू जी ने जिस मिश्रित अर्थव्यवस्था को चुना था उसी के द्वारा प्रगति एवं खुशहाली आनी थी। माननीय मोदी जी ने भी आज आई.आई.टी, आई.आई.एम एवं नये अनुसंधानो को बढावा दिया है अन्यथा आज ये संस्थान समाप्त हो गये होते।

हम जानते है कि अंग्रेज भारत को सपेरो का देश कहते थे आज वही अंग्रेज भारत की ओर सम्मान की दृष्टि से देखते है। आज भारत ने इसरो, डी.आर. डी.ओ. के माध्यम से नई उचांईयां प्राप्त की है। चन्द्रयान, मंगलयान मिशन सफलतापूर्वक भेजकर भारत ने विकसित राष्ट्रों मे अपनी गिनती कराई है। इन सबके सूत्रधार नेहरू ही थे इसलिए आज भी प्रासंगिक है। हालांकि नेहरू जी पर कश्मीर समस्या का एक प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है लेकिन कोई भी व्यक्ति पूर्ण नही हो सकता। किसी न किसी मे कुछ न कुछ कमी अवश्य होती है यदि नेहरू कश्मीर समस्या को विश्व स्तरीय संस्था यू.एन.ओं. के सामने प्रस्तुत नही करते तो आज संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.), वर्ल्ड बैंक, विश्व व्यापार संगठन जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का अस्तित्व ही समाप्त हो गया होता। नेहरू के जीवनकाल मे ही डॉ0 राममनोहर लोहिया ने उनकी सरकारी फिजूल खर्ची, पश्चिम परस्ती, अंगेजीयत व वंशवादी मोह की कडी आलोचना की थी उस आलोचना का तर्कसंगत ढंग से खारिज करना कठिन था पर सच का तकाजा यह है कि आज भी इस बात को स्वीकार किया जाए कि अपनी यशस्वी पुत्री और अन्य

उत्तराधिकारीयों की तुलना मे उनका कद बहुत बडा था। भले ही उनके जीवनकाल मे लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य जे.बी.कृपलानी और अम्बेडकर जैसे दिग्गजों का मोहभंग उनसे हो चुका था। लेकिन इसका अर्थ उन्हे जानबुझकर भुलाना कतई नही हो सकता। हम आज भी उनके पद चिन्हों पर चलने का प्रयास कर रहे हैं।

भारतीय इतिहास में पंडित जवाहरलाल नेहरू का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में नामित किया गया और उनके नेतृत्व में देश ने एक नया उद्यमी और विश्वविद्यालयी दिशा लिया। नेहरू जी को एक अद्वितीय व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है, जो अपने समय के नेता नहीं थे, बल्कि एक विचारक, शिक्षक, और सामाजिक सुधारक भी थे। जन्म से लेकर उनके नेतृत्व के क्षेत्र तक, नेहरू की यात्रा उनके पिता, मोतीलाल नेहरू और माता, स्वरूपराणी के प्रभाव में आई। उनके जीवन में शिक्षा का महत्व बहुत अधिक था, और उन्होंने इसे समाज की सबसे बड़ी समस्या के रूप में देखा और समाधान के लिए काम किया। उनकी यात्रा अविरल विद्या, विचारशीलता, और प्रेम के संदेशों से भरी रही। नेहरू का शैक्षिक करियर उन्हें विश्वविद्यालय के उच्चतम पदों पर ले गया, लेकिन उनकी आत्मा में राष्ट्रीय उत्साह और समाज के प्रति प्रेम के साथ, वे राजनीतिक सफलता की तलाश में नेहरू जी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने का रास्ता चुनने के लिए प्रेरित किया। उनका संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम के सबसे महत्वपूर्ण चरणों में से एक था। उन्होंने भारतीय जनता के साथ मिलकर आजादी के लिए संघर्ष किया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपने जीवन को समर्पित किया। उनकी नेतृत्व में विचारशीलता, विचारधारा, और उत्साह ने देश को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता मिलने के बाद, नेहरू जी को प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। उनका कार्यकाल विभिन्न चुनौतियों से भरा था, जिनमें देश के विकास और समृद्धि की रक्षा, समाज के विकास, और भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थायिता शामिल थी। उनके कार्यकाल में भारत ने विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया और उनका योगदान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त किया।

धारा और नैतिकता ने विश्व के ध्यान को अपनी ओर खींचा। उन्होंने भारत को एक विश्वविद्यालयी देश के रूप में परिभाषित किया, जो अपने दारिर्द्य से निपटने के लिए सक्रिय रूप से काम किया और आर्थिक उन्नति की दिशा में कदम बढ़ाया। उनके प्रशासनिक कौशल, दूरदर्शिता, और नेतृत्व के प्रभावी तरीके से, नेहरू ने देश को आधुनिक भारत की दिशा में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय संविधान की रचना में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो भारत को एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में बनाने में सहायक साबित हुआ। नेहरू जी की प्रेरणा और उनकी विचारधारा आज भी अनदेखा नहीं जा सकता। उनके द्वारा स्थापित विचारधारा और मूल्यों ने आज के भारत की आधुनिकता और उदारता की नींव रखी है। उनका योगदान भारतीय समाज और राजनीति के इतिहास में अविस्मरणीय है, और उन्हें हमेशा सम्मान और स्मृति में याद किया जाएगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू का राजनीतिक सफर भारतीय इतिहास के एक उत्कृष्ट और उपलब्धि से भरा हुआ है। उनका संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम से लेकर भारत के पहले प्रधानमंत्री बनने तक बेहद महत्वपूर्ण था। नेहरू जी की राजनीतिक यात्रा उनके विचारों, दृढ़ता और समर्पण का प्रतीक है। नेहरू जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में गांधी जी के अनुयायियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, नेहरू जी को प्रधानमंत्री के रूप में चुना गया। उनका भारत को आधुनिक और विकसित बनाने के उद्देश्य में काम करने का संकल्प था। नेहरू जी का नेतृत्व आधुनिकता, शिक्षा, और आर्थिक विकास की दिशा में था। उन्होंने भारत को एक विश्वविद्यालयी देश के रूप में परिभाषित किया और विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए कई योजनाएं शुरू की। नेहरू जी ने भारत की अपनी विदेश नीति को अस्पष्टता से परिभाषित किया और अन्य देशों के साथ संबंधों को स्थापित किया। उन्होंने विश्व के सम्मान में भारत का प्रतिष्ठान बढ़ाने का प्रयास किया। नेहरू जी का नैतिक दृष्टिकोण उनके नेतृत्व के माध्यम से प्रकट हुआ। उन्होंने भारतीय समाज में विश्वास, साहस, और सामाजिक न्याय के मूल्यों

को प्रमुखता दी। नेहरू जी एक समाज सुधारक और शिक्षा के प्रोत्साहक भी थे। उन्होंने बालकों और युवाओं के शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाया और समाज में विभिन्न वर्गों के लोगों के बीच समानता की बढ़ावा दी। नेहरू जी ने भारत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित बनाया और विश्व नेता के रूप में अपना योगदान दिया। उनकी नेतृत्व में भारत ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मुद्दों में अपनी आवाज को सुनवाई करवाई। नेहरू जी की राजनीतिक यात्रा एक प्रेरणास्पद और उदाहरणीय इतिहास है, जो उनके देशवासियों के लिए समर्पित थी और भारतीय इतिहास के पन्नों में शानदार चिह्न बनी।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने जीवनकाल में विभिन्न विषयों पर लेखन किया और कई पुस्तकें लिखीं। उनके लेखन–कार्य में राजनीति, समाज, साहित्य, विज्ञान, और विश्व इतिहास जैसे विषयों पर व्यापक ज्ञान और विचारों का संग्रह है। यहां कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों और लेखों का संक्षिप्त विवरण है :

''भारत की खोज'' : नेहरू द्वारा लिखी गई इस पुस्तक में उन्होंने भारतीय इतिहास, संस्कृति, और दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया। यह पुस्तक उनकी भारतीयता और राष्ट्रवाद के प्रति उनकी गहरी अभिरुचि का परिणाम है।

''विश्व इतिहास के झलक'' : इस पुस्तक में नेहरू ने विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं और व्यक्तित्वों का विवरण दिया है। यह एक व्यापक समय समाचार के रूप में उनके द्वारा लिखा गया था।

''एक पिता के पत्र उसकी बेटी के नाम'' : नेहरू के इस ग्रंथ में वे अपनी बेटी इंदिरा गांधी के लिए उपदेश और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह पुस्तक भारतीय समाज के मूल्यों और नीतियों को स्थायित्व देती है।

''आत्मकथा'' : नेहरू की आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों, राजनीतिक संघर्षों, और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान की घटनाओं का विवरण दिया है।

इसके अलावा, नेहरूजी के निबंध, लेख, और भाषण भी उनके सोच और दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं और उनके विचारों का व्यापक धरोहर हैं।

उपसंहार

पंडित जवाहरलाल नेहरू की प्रासंगिकता के वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन से कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :

1. ''राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रवाद'' : नेहरूजी की राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रवादी दृष्टि आज भी महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से जब भारत समृद्ध, विभिन्नता से भरा हुआ है। उनके सोचने का तरीका और उनका समर्थन एक समृद्ध और एकत्रित भारतीय समाज के लिए महत्वपूर्ण है।
2. ''विज्ञान और प्रौद्योगिकी'' : नेहरूजी की दृष्टि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति सकारात्मक थी, और वर्तमान समय में भी भारतीय अर्थव्यवस्था और उद्योग के विकास में यह महत्वपूर्ण है।
3. ''अंतरराष्ट्रीय संबंध'' : नेहरूजी के विचार और दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के संबंधों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से वर्तमान में भारत की विश्व नेतृत्व की भूमिका को ध्यान में रखते हुए।
4. ''शिक्षा'' : नेहरूजी की शिक्षा के प्रति प्रेरणा और उनकी शिक्षा नीतियों का महत्व आज भी हमारे समाज के शिक्षा के क्षेत्र में महसूस होता है, विशेष रूप से उनके आदर्शों के साथ सम्मिलित।

इन निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि पंडित नेहरू की विचारधारा और दृष्टिकोण वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण हैं, और उनका आदर्श और सोच आज के भारतीय समाज के लिए भी प्रेरणास्पद है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. नेहरू का देश के नाम भाषण, रेडियो ब्रॉडकास्ट 31 दिसम्बर,1952
2. जवाहर लाल नेहरू के भाषण
3. जवाहर लाल नेहरू पत्र व्यवहार, नेहरू स्मारक संग्राहलय
4. पंडित जवाहर लाल नेहरू – भारत की खोज, मैरीडियन बुक लिमिटेड
5. डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव, नेहरू एक वहुआयामी व्यक्तित्व, अमन प्रकाशन कानपुर 1992
6. आनन्द शंकर शर्मा, दिव्य पुरूष नेहरू, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 1966
7. प्रकाश चन्द्र यादव, नेहरू परिवार की कहानी, कन्हैया पुस्तक भवन, इलाहाबाद 1973
8. शुकदेव प्रसाद, नेहरू और विज्ञान, पराग प्रकाशन, शहादरा दिल्ली 1989
9. राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू अभिनन्दन ग्रंथ, आर्यावृत प्रकाशन 1949
10. जवाहर लाल नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, जोहन डे कंपनी, न्यूयॉर्क 1956